दो राक्षस

माइकल

दो राक्षस

माइकल

बहुत पहले की बात है. दो राक्षस एक बहुत सुन्दर देश में रहते थे. वहां गर्मियों में भी मौसम सुहाना रहता था. जाड़ों में वहां पूरी ज़मीन स्नो से ढंक जाती थी और नज़ारा देखने में बेहद सुन्दर लगता था.

दोनों राक्षस रोजाना पहाड़ों और जंगलों में घूमते थे. घूमते समय वो बड़े ध्यान से चलते थे जिससे कि उनके पैरों से कोई पेड़ कुचल न जाए. चिड़िये, राक्षसों की दाढ़ी में अपने घोसलें बनाती थीं. जहाँ भी राक्षस जाते वहां पर कोयल और पपीहे गीत गाते थे.

एक दिन समुद्र में नाव की सवारी करते हुए दोनों राक्षसों को एक गुलाबी रंग का सीप दिखाई दिया. सीप बहुत चमकीला था और दोनों राक्षसों को वो बहुत पसंद आया.

“अगर मैं इसे अपने गले में माला जैसे पहनूं तो यह कितना अच्छा लगेगा,” उसमें से बोरिस नाम के राक्षस ने कहा.

“बिल्कुल नहीं! इसे मैं अपने गले में माला जैसे पहनूंगा, तुम नहीं,” दूसरे राक्षस सैम ने कहा. “मेरे गले में सीप ज्यादा सुन्दर लगेगा.”

पूरी ज़िन्दगी में पहली बार दोनों राक्षस आपस में बहस करने लगे. जब दोनों एक-दूसरे पर चिल्लाए तब सूरज एक बादल के पीछे जाकर छिप गया और बादलों का रंग गहरा गया.

हवा तेज़ी से सायं-सायं करके चलने लगी और समुद्र में लहरें और आसमान में बादल उठने लगे. कुछ देर बाद तेज़ी से बारिश होने लगी. दोनों राक्षसों में झगड़ा जितना बढ़ा, दिन उतने ही ठंडे होते गए. धीरे-धीरे समुद्र की ऊंची-ऊंची लहरें तट को निगलने लगीं.

बोरिस और सैम ने जल्दी-जल्दी अपने मोज़े पहने. पर इससे पहले वो जूते पहन पाते एक ऊंची लहर आई और उससे पूरा तट पानी में डूब गया.

वो ऊंची लहर राक्षसों के जूतों और उस सुन्दर गुलाबी सीप को बहाकर ले गई.

यह देखकर दोनों राक्षसों को बहुत गुस्सा आया और वे एक-दूसरे पर पत्थर फेंकने लगे. वे समुद्र की बाढ़ से बचने के लिए पहाड़ों की तरफ दौड़ने लगे.
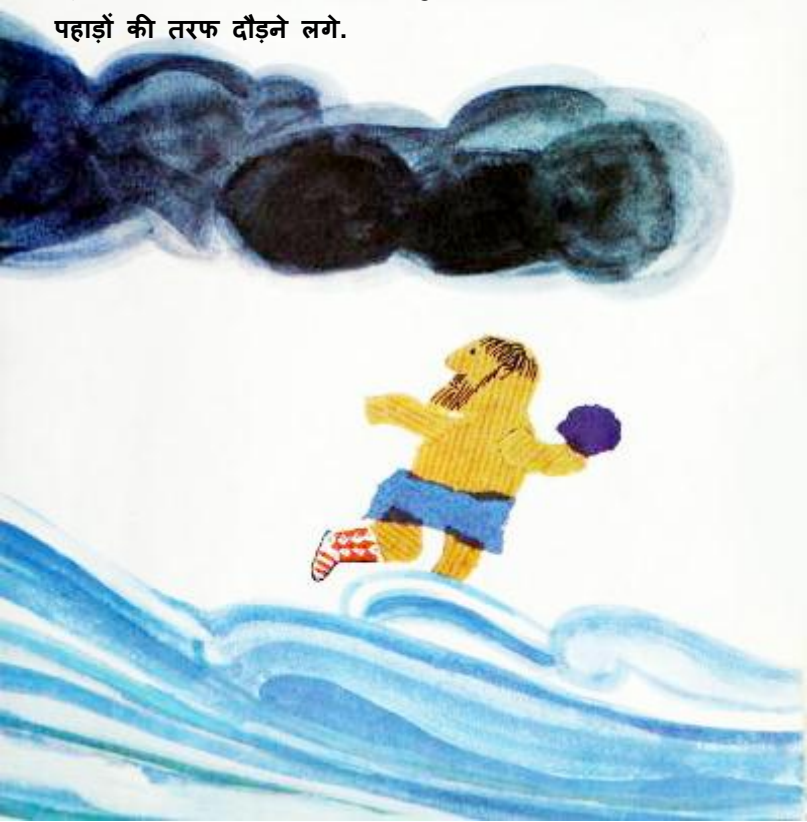
जल्द ही दो पहाड़ों को छोड़कर पूरा-का-पूरा देश पानी में डूब गया. अब पूरे ठंडे समुद्र में केवल वो दोनों पहाड़ ही टापू जैसे बचे थे. उनमें से एक पहाड़ पर बोरिस और दूसरे पर सैम रहता था.

वहां ठंड थी. उन दोनों को वैसे स्नो बहुत अच्छी लगती थी. पर स्नो पड़ना बंद हो गई थी. वहां अब एक जाड़े के बाद दूसरी सर्दी आती थी. राक्षस अब गर्मियों के सुहाने मौसम को भूल चुके थे. वहां अब हर दिन पहले दिन जैसा ही ठंडा और मनहूस होता था.

दोनों राक्षस एक-दूसरे पर बहुत गुस्सा करते थे. पहले वो एक-दूसरे पर छोटे पत्थर फेंकते थे. पर अब उन्होंने बड़े-बड़े पत्थर फेंकने शुरू कर दिए थे.

सोमवार वाले दिन सैम, बोरिस पर एक बड़ा पत्थर फेंकता था.

फिर मंगलवार को बोरिस सैम पर एक पत्थर फेंकता था.

बुधवार को दुबारा पत्थर फेंकने की सैम की बारी आती थी.

यह सिलसिला हफ्ते, दर-हफ्ते लगातार चलता रहता था.

हाँ, इतवार वाले दिन ज़रूर शांति रहती थी.

जब दोनों राक्षसों के नाक, कान, मुहं और सिर पत्थरों की चोट से ज़ख़्मी हुए तब उनके गुस्से का कोई ठिकाना न रहा.

पूरे समुद्र में राक्षसों के फेंके पत्थरों की एक कतार लग गई थी. एक दिन सैम ने उन पत्थरों पर कूदकर जाने की सोची. उसने बोरिस के सोने का इंतज़ार किया और फिर वो अपना पत्थर का विशाल गदा लेकर पत्थरों पर कूदता हुआ बोरिस के पहाड़ पर चढ़ने लगा.

सैम, पहाड़ पर चढ़कर सोते हुए बोरिस को अपने गदे से मारना चाहता था जिससे वो पूरे दिन सोता रहे और उसकी ओर पत्थर न फेंके.

सैम समुद्र में पहले पत्थर पर कूदा. फिर वो दूसरे पत्थर पर कूदा.

जैसे ही सैम तीसरे पत्थर पर कूदा, वैसे ही बोरिस की एक आँख खुल गई. उसने सैम को गदा लेकर अपनी ओर आते हुए देखा. तुरंत बोरिस ने भी अपना गदा उठाया और वो भी पत्थरों पर कूदता हुआ बोरिस की ओर लपका. जैसे-जैसे दोनों भीमकाय राक्षस पत्थरों पर कूदे वैसे-वैसे पूरी दुनिया हिलने और कांपने लगी.

फिर अचानक दोनों राक्षस रुके. सैम ने बोरिस के पैरों की ओर देखा. बोरिस ने सैम के पैरों की ओर देखा.

दोनों राक्षसों के पैरों में एक सफ़ेद-काला और दूसरा लाल-नीला मोजा था.

वो अपने मोज़ों को बहुत देर तक घूरते रहे.

धीरे-धीरे करके उन्हें वो दिन याद आया जब समुद्र की बाढ़ से पूरी ज़मीन पानी में डूब गई थी. बाढ़ से बचने की जल्दबाजी में दोनों राक्षसों के मोज़ों की आपस में अदला-बदली हो गई थी. अब तक वो अपनी आपसी लड़ाई और रंजिश का कारण भी भूल चुके थे. उन्हें सिर्फ इतना याद था कि वे दोनों बरसों के लंगोटिया यार थे. जब उन्हें वो ख़ुशी के दिन याद आये तब उन्होंने अपने-अपने गदे समुद्र में फेंक दिए और फिर ख़ुशी से नाचने-गाने लगे. जब वो अपने-अपने टापुओं पर वापिस लौटे तब दोनों को एक-एक सफ़ेद फूल दिखाई दिया और उन्हें अपने कंधों पर सूरज की धूप की गर्मी महसूस हुई.

धीरे-धीरे समुद्र में बाढ़ का पानी भी उतरने लगा. जहाँ कभी पानी था वहां पर अब फूल खिलने लगे. अब टापुओं पर चिड़ियें भी लौट आई.

कुछ समय बाद दोनों पहाड़ों के बीच में ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की एक वादी उग आई. एक बार दुबारा वो देश बहुत सुन्दर बन गया. जब सैम और बोरिस दोनों जंगली फूलों के बीच बैठते थे तो अक्सर कोई टिड्डा उनकी गोदी में कूदकर बैठ जाता.

कभी सैम के कान या बोरिस की नाक में कोई तितली घुस जाती थी. अक्सर उनके सिर और फूलों के ऊपर चिड़िये आकर बैठतीं थीं. अब दोनों राक्षस खुश थे. मौसम भी अब पहले की तरह ही हो गया था.

कभी-कभी दोनों राक्षस अपने देश का चक्कर लगाते – वे घने जंगलों, घास और स्नो में से होकर गुज़रते थे. कभी-कभी वो समुद्र के किनारे रेत पर अपने बड़े-बड़े पैरों के पदचिन्ह बनाते थे. पर अक्सर वो घने पेड़ों के बीच ही आराम करते थे क्योंकि वो जंगल चिड़ियों और रंग-बिरंगे फूलों से पूरी तरह भरा हुआ था.

वो जो भी करते, वो हमेशा मोज़े अलग-अलग रंगों पहनते थे. जब कभी उनमें से कोई एक नए जोड़ी मोज़े लाता तो वो उनमें से एक मोजा दूसरे राक्षस को ज़रूर देता...

...क्योंकि क्या पता कभी कुछ हो जाए!